ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को श्रावणी पर्व एवं
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की
हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 37, अंक 34 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 11 अगस्त, 2014 से रविवार 17 अगस्त, 2014
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 190 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी –भाद्र कृ. अष्टमी (18 अगस्त) पर विशेष

बृहत्तर भारत कर्तारम् श्री कृष्णं वन्दामहे

– प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

5 सहस्त्र वर्षों से भी पुरानी बात है। द्वापर युग का अन्त और कलियुग का आरम्भ होने वाला था। मेगस्थनीज के यात्रा के विवरणों के आधार पर आज 2071 वि., 2014 ई. में 5086 वर्षों की पूर्व की बात है। भारतीय इतिहास की गणना में भगवान् श्रीकृष्ण का काल 5153 वर्ष के लगभग प्राचीन है। श्रीकृष्ण युधिष्ठर के राज्यभिषेक के पश्चात् महाभारत युद्ध के पश्चात् 36 वर्ष जीवित रहे थे। भारतवर्ष के इतिहास की दृष्टि से यह द्वापर और कलियुग का सन्धिकाल ऐसा कालखण्ड है जब भारत वसुन्धरा पर प्रतिकूलता और विपत्ति की काली घटाएँ घुमड़-घुमड़ कर घिरती चली आ रहीं थीं। कहने को तो जरासन्ध मगध में सम्राट था और अन्य सब माण्डलिक राजा थे। किन्तु वास्तव में सम्पूर्ण भारत देश खण्ड-विखण्ड होकर राष्ट्रीय दृष्टि से आत्मघाती मार्ग पर बढ़ता चला जा रहा था। सम्राट जरासन्ध इतना अन्यायी था कि उसने 86 आंचलिक राजाओं को गिरिव्रज के कारागार में बन्दी बना रखा था और एक सौ की संख्या पूरी होने पर उन्हें महादेव की बलि चढ़ा देने की योजना बना रहा था।

इधर हस्तिनापुर में भीष्म जैसे अजेय-बाल-ब्रह्मचारी और द्रोण शास्त्रास्त्रों के दिग्गज आचार्य थे, किन्तु राष्ट्रीयता की दृष्टि से सब बेकार। अन्धे धृतराष्ट्र की राज्य लिप्सा, कौरव-पाण्डवों का कुलघाती संघर्ष इतना भारी पड़ रहा था कि इन सबके न कोई उच्च राष्ट्रीय आदर्श, न राष्ट्रनीति, न अन्याय का विरोध, कुछ भी न रह गया था। इनकी नाक के नीचे ही इन्हीं के सम्बन्धी, कुन्ती के मातृ पक्ष में, कंस मथुरा में अपने पिता उग्रसेन से यदुवंशियों का राज्य छीनकर उनको कारागार में बन्दी बनाकर स्वयं राजा बन बैठा था और इनके नजदीकी सम्बन्धी हस्तिनापुर वालों के भीष्म, द्रोण, धृतराष्ट्र के कान में जूँ तक न रेंगी। यह था नैतिकता और राष्ट्रीयता के पतन का एक ज्वलंत उदाहरण। कहने को यदुवंशियों के 18 कुल थे ओर 18 हजार यदुवंशी थे किन्तु सब कंस से डरते थे क्योंकि कंस सम्राट जरासन्ध का दामाद था। जरासन्ध की दो

पुत्रियाँ ''अस्ति'' और ''प्राप्ति'' कंस को दो ब्याही थीं। अत: कंस को अपने श्वसुर जरासन्ध का संरक्षण प्राप्त था।

सम्पूर्ण भारत का राष्ट्रीय परिदृश्य आंचलिक राज्यों में परस्पर संघर्षरत था। पश्चिम में मद्र (ईरान) में शल्य, गांधार (अफगानिस्तान) में शुकनी, सौवीर सिन्धु में जयद्रथ, हस्तिनापुर में कौरव-पाण्डवों को गृह युद्ध, मथुरा में कंस, इधर पूर्व प्राग्ज्योतिषपुर में नरकासुर, भगदत्त, मगध में जरासन्ध, सम्पूर्ण देश अन्याय, अत्याचार, पारस्परिक विद्रोह- विग्रह में कराह रहा था। धर्म की ग्लानि हो रही थी और अधर्म बढ़ता जा रहा था। इसी समय भारत वसुन्धरा का राष्ट्रीय उद्धार करने के लिये श्रीकृष्ण चन्द्रोदय हुआ। लोकनायक श्रीकृष्ण ने अपने जीवन के उद्देश्य की घोषणा कर दी-

''परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे-युगे।।'' गीता. 4-8

अर्थात् श्री कृष्ण के जन्म और जीवन का उद्देश्य अधर्म का नाश और धर्म की स्थापना तथा दुष्टों का दमन और सज्जनों, साधु-सन्तों की रक्षा करना था। भाद्रपद की कृष्ण अष्टमी को आनन्दकन्द देवकीनन्दन श्रीकृष्ण का जन्म हुआ। श्रीकृष्ण और उनके बड़े भाई बलराम धीरे-धीरे बड़े होने लगे और मल्लयुद्ध में प्रवीण होने लगे। यदुवंशी 18 कुलों में 18 हजार थे और वे कंस को हटाकर उग्रसेन को यादव संघ का राजा बनाना चाहते थे, किन्तु सम्राट जरासन्ध के संरक्षण में रहने के कारण जरासन्ध के जामाता कंस को

– शेष पृष्ट 4 पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की
तीन दिवसीय कार्यकर्त्ता गोष्ठी एवं साधारण सभा बैठक
तिथियों में परिवर्तन

सार्वदेशिक सभा के समस्त साधारण सभा के सदस्यों को सूचित किया जाता है कि दिनांक 29-30-31 अगस्त को होने वाली तीन दिवसीय कार्यकर्ता गोष्ठी कुछ विशेष अपरिहार्य कारणों से स्थगित कर दी गई है। **अब यह गोष्ठी 26-27-28 सितम्बर, 2014 को गुरुकुल कांगड़ी में ही आयोजित की जाएगी।** जिन प्रतिनिधियों/ सदस्यों/कार्यकर्ताओं ने अपने रेलवे टिकट आदि आरक्षित करा लिए हों, उनसे अनुरोध है कि अपने टिकट रद्द कराकर नई तिथियों के लिए पुन: आरक्षित करा लेवें। स्थगन के कारण प्रतिनिधियों/सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं को हुई असुविधा के लिए हार्दिक खेद है।

आचार्य बलदेव प्रधान, सार्वदेशिक सभा
प्रकाश आर्य मन्त्री, सार्वदेशिक सभा

दिल्ली आ. प्र. सभा के तत्त्वावधान में आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट सहयोग से संचालित
गुरु विरजानन्द संस्कृतकुलम् का वार्षिकोत्सव एवं गुरुवर विरजानन्द दण्डी दिवस समारोह

रविवार 21 सितम्बर 2014	आर्यसमाज आनन्द विहार एल ब्लाक, हरि नगर, नई दिल्ली

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं एवं संस्कृतकुलम् के ब्रह्मचारियों को अपना आशीर्वाद प्रदान करें।

ब्र. राजसिंह आर्य	विनय आर्य	वीरेन्द्र मल्होत्रा	महेन्द्रसिंह आर्य	सुधा गुप्ता	धनंज्य शास्त्री
प्रधान	महामन्त्री	प्रधान	मन्त्री	प्रधान	आचार्य
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा		आर्यसमाज आ.वि. एल ब्लाक		गु.वि. संस्कृतकुलम्	

वेद-स्वाध्याय

पाप का निवारण अघमर्षण मन्त्र

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः॥ १॥
समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी॥ २॥
सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः॥ ३॥
ऋग्वेद : मंडल 10 सूक्त 190 मन्त्र 1-3

अर्थ—परमेश्वर के **(अभीद्धात् तपसः)** सब ओर से दीप्त, ज्ञानमय तप से **(ऋतम्)** वेद-ज्ञान [सृष्टि के नियामक नियम] **(सत्यम्)** कारण-रूप प्रकृति **(अध्यजायत)** प्रसिद्ध होता है। **(ततः)** उसी परमेश्वर से रात्री प्रलयरूप रात्रि **(अजायत)** प्रसिद्ध होती है **(ततः)** उसी से पृथिवी और आकाशस्थ समुद्र उत्पन्न होते हैं।

तप से अभिप्राय अनन्त सामर्थ्य या ईक्षण क्रिया, संकल्प से है। परमात्मा ने सृष्टि की रचना के साथ ही वेद-ज्ञान भी दिया जिससे सभी मानव पदार्थों के गुण, कर्म जान वेदोक्त कर्म करने में समर्थ हुये। आज भी बाजार से जब किसी उपकरण को लाते हैं तो छोटी-सी पुस्तिका उसके साथ आती है जिसमें उस उपकरण यन्त्र के चलाने और कार्य करने की विधियों का ज्ञान होता है। इसी भाँति ईश्वर ने सृष्टि की रचना के साथ ही चारों वेदों का ज्ञान भी दिया। महाप्रलय और उसके पश्चात् प्रलय रात्रि भी वही करता है। भूमि पर स्थित समुद्र और आकाशस्थ विशाल समुद्र की रचना भी उसी ने कही है।

(समुद्रात् अर्णवात् अधि) जल से भरे समुद्र की उत्पत्ति के पश्चात् **(सम्वत्सरः अजायत)** सम्वत्सर अर्थात् क्षण, मुहूर्त्त, प्रहर, दिन-रात्रि, मास, वर्ष आदि की प्रसिद्धि हुई। **(विश्वस्य मिषतः वशी)** उसी ईश्वर ने सहज स्वभाव से जगत् के रात्रि, दिवस, घटिका, पल, क्षण आदि जैसे थे वैसे ही **(व्यदधत्)** रचे हैं।

काल का मापदण्ड सूर्य है। इन मन्त्रों में जहाँ 'अधि' उपसर्ग पहले हो वहाँ उसके अनन्तर समझना चाहिये यथा समुद्र की उत्पत्ति के पश्चात् सम्वत्सर की उत्पत्ति या प्रसिद्धि हुई। जहाँ केवल अजायत का ग्रहण है वहाँ बिना क्रम के उत्पत्ति समझनी चाहिये। प्रलय रात्रि में प्रकृति साम्यावस्था में रहती है। सभी जीवात्मा सुषुप्ति जैसी अवस्था और सूक्ष्म शरीर भी छिन जाने से उनके पुण्यापुण्य रूप कर्म समष्टि बुद्धि महत्त्व और महत्तत्व अपने कारण प्रकृति में लीन हो जाता है। जब सृष्टि की उत्पत्ति होती है तब जीवों को जाग्रतावस्था और सूक्ष्म शरीर एवं उनके कर्माशय पुनः वापिस परमात्मा की व्यवस्था से मिल जाते हैं।

यहाँ विचारणीय विषय यह है कि प्रलयावस्था में इतने दिनों तक जीवों को सुषुप्ति अवस्था में रखे जाने का क्या प्रयोजन है? जैसे किसी को घर छोड़ना पड़े तो वह दूसरे घरों में स्थानान्तरित हो जाता है। जब परमात्मा की अनन्त सृष्टि और लोक-लोकान्तर हैं तो उन जीवों को वह क्यों नहीं भेज देता। साथ ही यह दोष भी आयेगा कि पृथिवी पर जितने भी जीव हैं वे अनन्त काल तक इसी पृथिवी पर जन्म लेते और मरते रहेंगे क्योंकि उनकी मुक्ति नहीं हुई है। अस्तु। मन्त्र में केवल सृष्टि-रचना का वर्णन ही किया है।

(धाता) सबके धारण करने वाले परमेश्वर ने **(सूर्याचन्द्रमसौ)** सूर्य और चन्द्रमा **(यथा पूर्वमकल्पयत्)** पूर्व सृष्टि में जैसी रचना की थी और उनकी रचना का ज्ञान भी उसे पहले ही से था, उसी के अनुसार उनकी सर्गारम्भ में रचना की **(दिवम् च)** और जैसा पूर्व सृष्टि में सूर्यादि लोकों का प्रकाश रचा था वैसा ही इस कल्प में भी रचा है। **(पृथिवी च)** पृथिवी और **(अन्तरिक्षं च)** अन्तरिक्ष की रचना भी पहले सर्ग के समान की है। जैसे अनादि काल से लोक-लोकान्तर को ईश्वर बनाया करता है, वैसे ही अब भी बनाये हैं और आगे भी बनायेगा क्योंकि ईश्वर का ज्ञान कभी विपरीत नहीं होता किन्तु पूर्ण और अनन्त होने से सर्वदा एक रस रहता है।

जैसे राजा और प्रजा सम काल में होते हैं और राजा के अधीन प्रजा होती है वैसे ही परमेश्वर के अधीन जीव और जड़ पदार्थ हैं। जब परमेश्वर सब सृष्टि की रचना करता और जीवों के कर्मों का फल देता है सबका रक्षक और अनन्त सामर्थ्य वाला है तो अल्प सामर्थ्य वाला जीव और जड़ पदार्थ उसके अधीन क्यों न हो? (सत्यार्थप्रकाश अष्टम समु०)

इन मन्त्रों को अघमर्षण अर्थात् पाप को नष्ट करने वाले कहा है। मन्त्रों के अर्थों पर विचार करने से विदित होता है कि इनमें सृष्टि की निर्माण-प्रक्रिया और उसके रचयिता परमेश्वर का वर्णन है।

जीवात्मा पाप कर्म में प्रवृत्त क्यों होता है यह पूर्व आये मन्त्र में विस्तार से कहा जा चुका है। सामान्य रूप से इसलिये पाप किया जाता है कि करने वाला यह मान लेता है कि मुझे कोई नहीं देख रहा है। कोई मेरा क्या बिगाड़ लेगा। कभी अभियोग भी चला तो मैं धन बल और अपने प्रभाव से छूट जाऊँगा। यदि फिर भी काम सिद्ध न हुआ तो क्षमा या अर्थ दण्ड से तो निश्चित रूपेण मेरी मुक्ति हो जायेगी। मुझे किसी का भय नहीं है आदि।

यदि हम सृष्टि-रचना में ईश्वर के गुण-कर्मों का विचार करें तो बुद्धि विचलित हो जाती है। हमारी जो पृथिवी है वही कितनी विस्तृत है और सूर्य इससे भी लाखों गुणा बड़ा है हमारी आकाश-गंगा में ऐसी लाखों पृथिवियां हैं और ऐसी करोड़ों आकाश-गंगायें इस अनन्त ब्रह्माण्ड में विद्यमान हैं जिन्हें वह परमेश्वर ही धारण कर रहा है। हमारी पृथिवी तो समुद्र जल के एक बिन्दु के समान है। वह परमसत्ता सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ है जो सभी को सब स्थानों में देख रही है। मैं धन के बल पर अभियोग से तो छूट जाऊँगा परन्तु उस बड़ी सरकार, जहाँ रिश्वत या कोई सिफारिश नहीं चलती, वहाँ छूटना सम्भव नहीं है। किये हुये कर्म का फल मुझे भोगना ही होगा। उसके अनन्त बल और सामर्थ्य के सामने मेरा अस्तित्व बहुत ही अल्प है तो फिर मैं किस बात का अभिमान करूं। वेद कहता है **द्वौ निषद्य यन्मन्त्रयेते राजा तद् वेद वरुणस्तृतीयः** दो व्यक्ति एकान्त में जो गुप्त मन्त्रणा करते हैं वहाँ तीसरा वरुण राजा भी उस बात को सुन रहा है। ईश्वर मुझे सर्वत्र देख रहा है। इत्यादि चिन्तन कर मन-बुद्धि को पापकर्मों से हटा लेने और पापकर्मों का परित्याग कर देने से ही इनका नाम **'अघमर्षण'** प्रसिद्ध हुआ है। - *क्रमशः*

आवश्यक है इच्छाओं के जंजाल से मुक्ति

- डॉ. पूर्ण सिंह डबास

संचार-क्रांति के इस युग में 'डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू' (www) अर्थात् 'world Wide Web' का बहुत शोर है। इसका अर्थ है पूरी धरती और उसके आकाश में व्याप्त इलैक्ट्रॉनिकी ताना-बाना या जिसके माध्यम से पूरे विश्व में बात-चीत या संभव है। बाहरी जगत में इस ताने-बाने से भी जटिल इच्छाओं का एक संजाल हमारे भीतर मन में भी मौजूद है। ये इच्छाएं मनुष्य में ही नहीं प्राणी मात्र में व्याप्त हैं जो जन्मजात है, सहज हैं अर्थात् साथ ही जन्म लेती हैं और स्वाभाविक हैं अर्थात् बिना कोशिश किए स्वयं ही उत्पन्न हो जाती है। छोटे-बड़े, सब का जीवन इच्छाओं से प्रेरित एवं परिचालित होता है। यदि इच्छाएं न होती तो संसार में कुछ नहीं होता। यह सारा विकास, जो हम अपने चारों ओर देखते हैं, सारा ज्ञान-विज्ञान, समग्र राग-द्वेष, इन सबके पीछे किसी न किसी रूप में इच्छाएं मौजूद हैं।

यदि गहराई से सोचें तो हमारी इच्छाओं का जन्म हमारी मूलभूत आवश्यकताओं या अनिवार्यताओं के परिणाम स्वरूप होता है। उदाहरण के लिए भूख-प्यास हमारी ऐसी ही अनिवार्यताएं है। नवजात शिशु को भूख लगती है तो वह रोने लगता है, प्यास लगती है तो रोने लगता है, दर्द होता है तो रोने लगता है। उसकी इच्छा होती है कि भूख, प्यास और दर्द शान्त हो। वह इन्हें शान्त करने के लिए कोई प्रयत्न या कर्म नहीं कर सकता, यह रोना ही उसका प्रयत्न है या कर्म है। जब थोड़ा बड़ा होता है तो पानी-भोजन स्वयं उठा लेता है, व्यापार करता है या उद्योग-धंधे आदि लगाता है और अपनी भूख, प्यास, आवास तथा वस्त्र आदि की अनिवार्यताओं का समाधान कर लेता है। यहां तक तो स्थिति सामान्य रहती है लेकिन इस से आगे जब ये भूख और अनिवार्य-आवश्यकताएं शरीर की भूख और आवश्यकताओं से आगे बढ़कर मन की भूख और आवश्यकताएं बन जाती है तो विस्तार की सीमा विस्तार की सीमा नहीं रहती। जब इनकी सीमाएं नहीं रहती तो इन्हें प्राप्त करने की इच्छाएं भला कैसे सीमित रह सकती है। पेट गौण बन जाता है, अधिक से अधिक प्राप्त करने की होड़ लग जाती है और मनुष्य पास-पड़ौस में, रिश्तेदारों में, और फिर देश-दुनिया में सर्वोपरि बन जाने की होड़ में जुट जाता है। यह होड़ ऐसी दौड़ या स्पर्धा बन जाती है जिसकी अंतिम सीमा या फिनिशिंग लाइन (पिदपैपदह सपदम) नहीं होती। और, यह सच है कि कोई भी धावक ऐसी दौड़ नहीं दौड़ सकता है जिसकी समाप्ति रेखा न हो। यदि वह दौड़ता है तो दौड़ की समाप्ति रेखा के अभाव में दौड़ने वाले की समाप्ति निश्चित है। परिणाम होता है कि जो इच्छाएं सुख दे सकती थी, मन को संतुष्ट कर सकती थी, वे अपने इस असीम विस्तार के कारण या सीमा लांघ जाने के कारण सुख के स्थान पर दुःख का घर बन जाती है। इसलिए हमारे ऋषियों ने रास्ता सुझाया कि इच्छाओं पर लगाम लगाओं, इन्हे पालतू बनाओ, सधाओ, ताकि ये तुम्हारे बस में रहें। इनके दास नहीं स्वामी बनो। किसी की भी हो, दासता, परवशता या पराधीनता कभी सुखद नहीं होती। इसलिए संत तुलसीदास ने कहा था:

'पराधीन सपनेहु सुख नाहीं'

अर्थात् जीते-जागते की तो बात ही छोड़ो पराधीन को तो सपने में भी सुख नसीब नहीं होता। जैसे हमने पशुओं को लगाम डालकर, खूंटे से बांधकर साध लिया, वश में कर लिया, पालतू बना लिया और उनसे सुख ले लिया इसी तरह इच्छाओं को भी वश में करके उनसे सुख लो। इनको भी खूटे से बांधो। जहां ये जन्मती और पनपती हैं उस मन को और इंद्रियों को नियंत्रण में करो। जिस प्रकार हम बेलगाम, उच्छृंखल तथा बेकाबू पशु को काबू में करके या सिधा कर उसका उसका सुखद उपयोग कर लेते हैं उसी प्रकार इन का भी उपयोग करो। मनु ने धर्म के जो निम्नांकित दस लक्षण बताए हैं :

'धृति, क्षमा, दमः अस्तेयं, झौचम्, इंद्रियनिग्रह, धीः विद्या, सत्यं अक्रोधो, दशकम् धर्म्म च लक्षणम्।'

अर्थात् - 'धृति, क्षमा, मन काबू, चोरी न करना, पवित्रता, इंद्रियों को वश में करना बुद्धि, विद्या, सत्य बोलना तथा क्रोध न करना' ये धर्म के दस लक्षण है।

इनमें **'दम'** तथा **'इन्द्रिय निग्रह'** इसी ओर संकेत करते है। दम का अर्थ है दमन अर्थात दबाना (मारना नहीं), काबू या

- शेष पृष्ठ 6 पर

प्रतिदिन यज्ञ करते हुए भी प्रायः लोगो को लाभ क्यों नहीं होता?

(वैदिक वैज्ञानिक महर्षि दयानन्दादि के 'भक्त' हवन में होने वाली त्रुटियों पर ध्यान दें)

- आचार्य आर्य नरेश

महर्षि दयानन्द सरस्वती वर्तमान युग के प्रथम ऐसे वैज्ञानिक थे जिन्होंने आज से लगभग 125 वर्ष पूर्व यज्ञ-हवन को वेद की छाया में संसार के सभी जड़ व चेतन पदार्थों हेतु सर्वाधिक लाभकारी वैज्ञानिक सुकर्म कहा। स्व. कालजयी क्रान्तिकारी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में यज्ञ पर शंका के उत्तर में लिखते है कि यदि तुम 'पदार्थ विद्या' जानते तो कभी यज्ञ का विरोध न करते। पदार्थ विद्या से अभिप्राय उन रासायनिक क्रियाओं से है जिस का अध्ययन कैमिस्ट्री इक्वेशनों के द्वारा किया जाता है। कहने का मूल अभिप्राय यह है कि वैदिक यज्ञ एक वैज्ञानिक क्रिया है। इस के द्वारा पूर्ण-लाभ अथवा शीघ्र-लाभ तभी हो सकता है जब हम इसे ठीक उसी प्रकार से करें जैसे कि देव दयानन्दादि ऋषियों ने वेद व शास्त्र के अनुसार इस का निर्देशन किया है। यदि हम इसे अपनी मन चाही इच्छा से एवं मनचाहे साधनों एवं विधियों से करते हैं तो इस से हानि होती है, लाभ कम होता है अथवा होता ही नहीं। इसके मुख्य कारण निम्नलिखित है:-

1. सब से बड़ी त्रुटी गलत माप के ऋषि आज्ञा के विरुद्ध हवन कुण्ड का चयन। देव दयानन्द सरस्वती संस्कार विधि व सत्यार्थ प्रकाश में हवन कुण्ड का परिणाम लिखते हुए संकेत करते है कि "जितना ऊपर से चौड़ा, उतना ही गहरा एवं उस चौड़ाई से चौथाई भाग पेंदे वाला अर्थात यदि ऊपर से 12इंच है तो गहरा 12इंच व पेंदे में 3×3 होना चाहिए। जबकि कुछ पौराणिक लोगों की नकल या समिधाओं को ठीक कारने से बचने हेतु गलत कुण्ड का परिमाण ल.म. होता है:

तर्क विज्ञान शील बुद्धिजीवी आर्यो को अपना कोई भी कार्य शास्त्र विरुद्ध न करना चाहिए, कुण्ड जितनी अच्छी धातु का होगा उतना अधिक लाभ होगा। वहले प्रकार के ऋषि निर्दिष्ट कुण्ड में जड़ी बूटियों को वाष्प रुप में लाने हेतु ज्वलन क्रिया में भीतर 600 से ऊपर 1300 तक तापमान पहुंच जाता है। जिससे प्रत्येक पदार्थ कम्बश्चन क्रिया द्वारा उचित लाभ पहुंचाता है। ऐसे कुण्ड में लाभ पूर्ण लेने हेतु छिद्र करने की कभी भूल न करनी चाहिए। छिद्र करने से तापमान कम हो सकता है तथा कुण्ड शीघ्र टूट जाता है एवं सामाग्री एवं घृत बाहर भी गिर जाते है। जो लोग जलने की सुविधा हेतु छिद्र करने की बात करते हैं नितान्त तर्क हीन व गलत है क्योंकि जब कुण्ड घरों व समाज भवनों की यज्ञशालाओं धरती के भीतर बनता है तब भी तो अग्नि बहुत अच्छी प्रकार से जलती है। अपितु धरती वाला कुण्ड अधिक लाभकारी होता है क्योंकि उसमें आहुत की गई विभिन्न रोगनाशक प्राकृतिक जड़ी-बूटियां सूक्ष्म होकर घर के नीचे वाली भूमि को भी स्वस्थ रखती हैं जिससे। इस से इससे दीमक आदि का भी भय नहीं रहता। आजकल दीमक का उपचार करने वाले जहां जानलेवा रासायनिक औषधियों को खिड़की किवाड़ व अलमारियों में लगाते है वहां इसके साथ-साथ भवन के चारों ओर की धरती में भी लगाते हैं। यदि आप के पास अपना घर है अथवा बनाने जा रहे हैं तो यज्ञ कुण्ड धरती में ही तीन मेखला वाला बनायें। पक्का हवन कुण्ड आपकी पक्की ईश्वर, वेद व ऋषि भक्ति का भी परिचायक है। यह आप के परिवार को आप के पश्चात् भी पक्का ईश-वेद भक्त बनने की व दैनिक यज्ञ के करने की प्रेरणा देकर आर्य बनाए रखेगा। यदि आप के पीछे पुत्र-पुत्रवधु व पौत्र आलस्यशात् छोड़ भी देंगे तो आने वाले आर्य अतिथि जन उन्हें आप द्वारा बनाये गए कुण्ड की स्मरण करवाकर पुनः परिवार सहित मिलकर संध्या हवन व वेद पाठ करने की प्रेरणा देगा। बुद्धिजीवी तर्कशील आर्यों! जब घर-भवन में अनेक कमरे सोने-रखने एवं गप लगाने के (ड्राईंरुम) जैसे पक्के तो फिर भगवान के सर्वश्रेष्ठ यज्ञ का स्थान कच्चा क्यों? वह घर=होम HOME ही नहीं जहां प्रतिदिन होम नहीं होता। मेखला का माप भी ऋषि ने दिया है। जब हमने यजुर्वेद के 12 अ० पर सर्च करवाई तो I.I.T. दिल्ली के वैज्ञानिक ने सर्वप्रथम यही पूछा कि आप का कुण्ड कैसा था जब मैंने 12×12×3 या 1×1×1/4 कहा तो वे कहने लगे बिलकुल ठीक है। इससे मिलता है पूर्ण लाभ।

यज्ञविज्ञान के पूर्ण लाभ हेतु कुण्ड कैसा हो? - कुण्ड सदा क%क%क/4 बनायें एवं उसमें भूलकर भी छिद्र न करें। ऐसे कुण्ड में हमारी आहुतियों को पूर्ण तापमान मिलने से वे पूर्ण लाभकारी होती है। गहरे कुण्ड में जहां रिएक्शन पूर्ण होते हैं वहां इसके साथ-साथ यज्ञ करने वाले को ताप भी कम लगता है। जबकि ठीक इससे विपरीत नाटे अवैदिक या पौराणिक कुण्ड में तापमान कम रहने व कैमिकल रिएक्शन अपूर्ण रहने से लाभ भी कम मिलता है एवं समिधाओं (लकड़ियों) और सामाग्री के जलने से बाहर निकलने वाला ताप भी चेहरे एवं शरीर को हानि पहुंचाता है। ऐसे गलत कुण्ड में यज्ञ करने वालों को वह अनावश्यक तीव्र आग रोगों का कारण भी बन सकती है। ऋषिवर ने पूर्ण लाभ दिलवाने एवं हानि से बचने हेतु प्रतिदिन यज्ञ करने वालो को मेखला वाले एवं गहरे कुण्ड बनाने की आज्ञा दी है। तीन मेखला (चारों ओर कुण्ड के बनी तीन सीढ़ियां) अपनी चौड़ाई के कारण यज्ञकत्री को अग्नि से उचित दूरी पर रखती है। पदार्थ जब जलते हैं तो वे वातावरण की ओर आक्सीजन से रिएक्ट होकर लाभ परिवर्तित होते है। मोनोआक्साईड आदि आक्सीजन से मिलकर व सूर्य तथा चारों ओर वनसपतियों की उपस्थिति में जीवनदायी बन जाती है। इसके लिए अग्निकुण्ड व यजमान में अन्तर चाहिए। यही मेखला का वैज्ञानिक लाभ है एवं यह यज्ञ कुण्ड का वस्त्र या शोभा भी माना जाता है। जब कुण्ड देवदयानन्द निदिष्ट संस्कार विधि के अनुसार सुन्दर कुमकुम हल्दी आदि की रेखाओं द्वारा सजाया जाता है तो इससे हमारी श्रद्धा भी प्रकट होती है और प्यार भी। गुजरात, महाराष्ट्र, उड़ीसा, कर्नाटक आदि प्रान्तों में माताएं घर की सफाई के पश्चात् उसके मुख्य द्वार पर रंगोली बनाती हैं। ऐसे घर में प्रवेश करते ही हृदय प्रफुल्लित होता है। ऐसे ही सुन्दर साफ, प्रतिदिन लिए हुए कुण्ड में यज्ञ हेतु बैठने पर मन की प्रसन्नता से उस क्रिया का पूर्ण व अधिक लाभ होता है। या तो कुण्ड में अग्नि रहे या फिर उसे प्रतिदिन कल की राख निकाल साफ कर लिया जाए। जो हानि नाटे कुण्ड में हवन करने से है उस से अधिक हानि राख से 1/2 भरे कुण्ड में यज्ञ करने में है, क्योंकि कुण्ड के नीचे पड़ी कल की राख आज वाली अग्नि को चमकाने के स्थान पर अपने में समेट कर मन्द कर देती है। एक बात यह भी ध्यान में रखने की है कि पक्के की अपेक्षा अन्दर से कच्चा कुण्ड अधिक लाभकारी है जो प्रतिदिन गाय के गोबर से लीपा जाता है। जो लोग कुण्ड में अर्थात मिट्टी वाली पक्की यज्ञवेदी में चींटियों को आने की शंका करत है वह उनका बलिवैश्व देव यज्ञ न

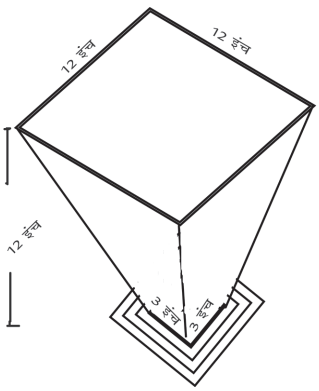

करने का पाप है। यदि गृहस्थ प्रतिदिन भोजन से पूर्व कीड़ो-मकोड़ो हेतु पक्षी सुरक्षित कुत्ते से सुरक्षित स्थान पर आटे में शक्कर मिलाकर डालेंगे तो कीड़ियां हवन कुण्ड में नहीं आएंगी। जो लोग कीड़ियों को हटाने हेतु पानी की नाली बनाते हैं वह गलत है। इसके लिए हमारी लिखी पुस्तक यज्ञविज्ञान परिचय पढ़ें यज्ञकुण्ड के चारों ओर नाली बनाने का कहीं विधान नहीं है। कर्मकाण्डीय ग्रन्थों में कुण्ड अनेक रूपों यथा गोल आदि बनाने का भी विधान है परन्तु उस का परिमाण क%क%क/4 ही होना चाहिए। जो लोग कुण्ड के बाहर न बना भीतर मेखला सीड़ी बनातें है वे भी गलत है इससे आहुतियां भीतर कुण्ड की दिवारों में अटक जाती हैं पूर्ण नहीं जलती व धूयें प्रदूषण करती है।

2. यज्ञीय भूमि या वेदी- यज्ञ के पूर्ण लाभ हेतु भूमि पवित्र अच्छी मिट्टी वाली व चारों ओर से खुली फूल-पत्ती बेलों से युक्त हो जिससे उनकी उपस्थिति में मन की प्रसन्नता गर्मियो में कम ऊर्षणता तथा फोटो सिन्थ जिस = प्रकाश संश्लेषण से यज्ञीय पदार्थों का पूर्ण लाभ हो सके। यज्ञ के समीप उन पौधों के रहने से उन के गुणों की भी वृद्धि होती है एवं कीट रहित निरोगी होकर अधिक लाभकारी होते है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु लौकी आदि के बेले एवं अन्य सब्जियों के पौधे भी लगाये जा सकते है। गवेषणा में हमनें सोयाबीन लगाई थी जो सफल रही।

"यज्ञशाला व समिधा विज्ञान"

महर्षि दयानन्द सरस्वती संस्कार विधि के सामान्य प्रकरण में यज्ञशाला व यज्ञवेदी को खुला 3 श्रद्धापूर्वक सजाने की बात लिखते हैं। ऊपर पर्दा बांधने की बात लिखते हैं। जिससे ऐसा विचार होता है कि कुण्ड में ऊपर से कोई विजातीय द्रव्य न गिरे एवं धूएं का ठोस कार्बन भाग छन जाए। इस पर विज्ञान वेत्ताओं को और अधिक विचार करना चाहिए। यज्ञशाला वे वेदी के सुन्दर बनने से मन प्रसन्न होकर रुचि को बढ़ाता है एवं बढ़ी हुई रुचि से लाभ अधिक होता है। इसी लिए यह कहावत भी लोक में प्रसिद्ध है कि रुचे सो पचे। बिना श्रद्धा, रुचि व मानसिक प्रसन्नता से खानापूरी के लिए किया गया यज्ञ पूर्ण लाभ नहीं देता। तन व मन से श्रद्धा-प्रसन्नता युक्त बैठें।

3. 'यज्ञीय समिधा' बिना कीड़े, बिना सड़को की गंदगी, बिना कोयला बनने वाली हल्की लकड़ी की होनी चाहिए जिन के जलने से सीधी राख बन जाए। जैसे बढ़, पीपल आम आदि जिन पर्वतीय स्थलों पर ऐसी समिधा न मिले वहां उन से मिलती जुलती फलों के पेड़ो की समिधा प्रयोग करें। आपातकाल में यदि ऊपर से स्वच्छ समिधा न मिले तो उन्हे पहले पानी से धोकर धूप में सुखा कर प्रयोग करें। समिधा यज्ञ का मूल प्राण है यदि समिधा सूखी, उचित वृक्ष की व ठीक परीमाण की नहीं है एवं वेदी में उनके रखने का प्रकार (ढंग) ठीक तो अधिक से अधिक घृत डालकर भी अग्नि का पूर्ण जलना कठिन है। दैनिक यज्ञ में प्रायः समिधा अंगूठे से मोटी न हो। कुण्ड के आकार समान ही उनकी छोटी से बढ़ी लम्बाई कटी हो। सब से नीचे पतली व छोटी समिधा चकोर अथवा तिकोण बना रखें। पतली समिधा शीघ्र अग्नि को पकडेगी व ऊपर वाली मोटी समिधा को तुरन्त जलायेंगी। अतः नीचे पतली व छोटी और मोटी व लम्बी समिधाएं रखे। नीचे मोटी समिधाएं रखने से शीघ्र जलेंगी नहीं एवं ऊपर बहुत पतली रखने से तुरन्त जलने के कारण राख हो जाने से सामग्री को जला नहीं पायेगी। कुण्ड में समिधा रखते समय ध्यान दें कि न तो कुण्ड की दीवारों से सटे एवं न ही कुण्ड के मध्य में आकर चारों ओर व बीच से मिलाने वाली वायु के रिक्त स्थान को रोककर अग्नि के बुझाने एवं न जलने का कारण बनें। यज्ञ सब से महत्वपूर्ण कार्य समिधाओं को ठीक रखना है एवं पूर्ण राख बनने से पूर्व समय पर और रखना है। राख बनने पर रखी गई समिधा शीघ्र नहीं जलती तथा आहुतियों को नहीं जला पाने से धूयें द्वारा रोग व

- शेष पृष्ठ 6 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

बृहत्तर भारत कर्तारम् श्री कृष्णं ...

युद्ध में हराना असम्भव था। अत: श्रीकृष्ण ने द्वन्द्व युद्ध में कंस को मार डालने की योजना बनायी। श्रीकृष्ण और बलराम की मल्ल विद्या का यश चारों ओर फैलने लगा। कंस श्रीकृष्ण और बलराम को मल्ल युद्ध में मरवा डालना चाहता था। कंस के दो दरबारी मल्ल योद्धा थे मुष्टिक और चारुण। कंस ने इन्हें नियुक्त किया कि वे दोनों मल्लयुद्ध में कृष्ण और बलराम को मार डालें। कंस के दरबार में मल्लयुद्ध का आयोजन हुआ। कृष्ण ने चारुण और बलराम ने मुष्टिक को पराजित करके जान से मार डाला। यह देखकर कंस घबरा गया और अखाडे से भागने लगा। श्रीकृष्ण ने कंस को धर-दबोचा और कंस के भाई सुनामा को बलराम ने आसानी से मार डाला। इधर सम्राट जरासन्ध की दोनों पुत्रियां विधवा हो गयी और जरासन्ध का क्रोध यदुवंशियों पर बहुत बढ़ गया और वह मथुरा में यादव संघ को नष्ट करने के लिये आक्रमण करने लगा। बाधित होकर यदुवंशी मथुरा छोड़कर पश्चिमी समुद्र के किनारे द्वारका में बस गये। श्रीकृष्ण और बलराम के सामने अस्त्र-शस्त्रों के संग्रह का प्रश्न था। दोनों ही अस्त्र-शस्त्रों की शिक्षा प्राप्त करने के लिए अवन्तिपुरी में सान्दीपनि ऋषि के गुरुकुल में गये-

अहोरात्रैश्चतु: षष्ट्या तदद् भुतमभूद् द्विज:। अस्त्रग्राम शेषञ्च प्रोक्तमात्रम वाप्य तौ।। (वि. पु.)

भावार्थ यह हुआ कि दोनों भाई कृष्ण और बलराम अवन्तिकापुरी में सान्दीपानि आचार्य के पास अस्त्र-शस्त्र सीखने, प्राप्त करने के उद्देश्य से गये। वहां वे 64 रात्रिदिन परिश्रम करके अद्भुत रुप से सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्रों को प्राप्त करने में सफल हुए।

भारतवर्ष का सम्राट जरासंध था और बिना जरासन्ध का वध किये बृहत्तर भारत संघ की स्थापना नहीं हो सकती थी। जरासन्ध के साथ ही दुष्ट अन्यायी राजाओं का एक धड़ा बन गया था। मथुरा में कंस, मगध में जरासंध, असम में नरकासुर, हस्तिनापुर में दुर्योधन, सिन्ध में जयद्रथ, मद्र (ईरान) में शिशुपाल सभी आंचलिक राजा थे। इन्द्रप्रस्थ में युधिष्ठर को माध्यम बनाकर श्रीकृष्ण बृहत्तर भारत, विशाल को एक संघ राज्य बनाने का सपना देख रहे थे। इस भारत महासंघ के निर्माण में सबसे बड़ी बाधा सम्राट जरासन्ध ही था। उसको सेना की लड़ाई में पराजित करना असम्भव था। श्रीकृष्ण ने कंस को द्वन्द्व युद्ध में मारा था। यह श्रीकृष्ण की सुपरीक्षित नीति थी। श्रीकृष्ण ने भीम और अर्जुन को साथ लेकर जरासन्ध की राजधानी गिरिव्रज की यात्रा की। तीनों स्नातक के वेश में वहां जा पहुँचे। श्रीकृष्ण ने परिचय दिया कि हम तीनों स्नातक है और इन दोनों का मौनव्रत है। आज आधी रात ये मौनव्रत तोड़ेगे, उसी समय हम आपसे वार्तालाप करेंगे। सम्राट जरासन्ध ने अतिथियों को यज्ञशाला में ठहरा दिया। रात बारह बजे सब जरासन्ध उनसे मिलने आया तो श्रीकृष्ण ने तीनों का परिचय दिया और जरासन्ध को द्वन्द्व युद्ध के लिये ललकारा। जरासन्ध ने भीम से मल्ल युद्ध स्वीकार कर लिया। वह कृष्ण ओर अर्जुन को अपनी जोड़ में हीन समझता था। अगले दिन कार्तिक प्रतिपदा को दोनों का मल्ल युद्ध आरम्भ हुआ। तेरह दिन लगातार कुश्ती होती रही। चतुर्दशी को जरासन्ध कुछ शिथिल होने लगा। कृष्ण ने भीम को प्रोत्साहित किया और भीम ने जरासन्ध को पटककर उसकी टांगे फाड़ दीं। जरासन्ध मारा गया। श्री कृष्ण की नीतिमत्ता थी कि बिना किसी रक्तपात के

मगध का साम्राज्य-सेना-कोष सब युधिष्ठर के अधीन हो गये। कृष्ण ने बन्दी 86 राजाओं को स्वतन्त्र कर दिया और मगध के सिंहासन पर जरासन्ध के पुत्र सहदेव का राज्यभिषेक कर दिया और इस तरह मगध भी कृष्ण-युधिष्ठर के अनुकूल हो गया।

महाभारत युद्ध के सफल नेता श्री कृष्ण- महाभारत का युद्ध कहने को तो कौरव-पाण्डवों का गृह युद्ध था किन्तु वास्तव में यह भारतखण्ड के भाग्य का निर्णायक युद्ध था। कौरव का पक्ष भीष्म, द्रोण, कर्ण आदि के कारण बड़ा प्रबल दुर्जेय था। श्रीकृष्ण को सम्पूर्ण परिदृश्य से हटा देने पर पाण्डव पक्ष अन्धकार में डूब जाजा है। श्रीकृष्ण न होते तो भीष्म की शर शय्या, द्रोण-जयद्रथ-कर्ण-दुर्योधन का वध का क्या रुप बनता? श्रीकृष्ण ने पाण्डवों की रक्षा की, शत्रुओं का वध करवाया। युधिष्ठिर सिंहासनारुढ़ हुए। अश्वमेध यज्ञ हुआ। सैकड़ों राज घराने एक सम्राट् के अन्दर आ गये। खण्ड-खण्ड विभक्त भारत महाभारत बना। यह सब श्री कृष्ण के नेतृत्व के कारण हुआ। काबुल गान्धर से असम तक सम्पूर्ण भारत एक राष्ट्र महाभारत बन गया, यह कृष्ण की ही सूझ बूझ थी।

राजनीतिक दृष्टि से, राजनीति विज्ञान (Political Science) की दृष्टि से, श्रीकृष्ण का महाभारत निर्माण या युधिष्ठिर का अश्वमेघ यज्ञ केवल सम्राट बनने की घोषणा मात्र न था। श्रीकृष्ण ने एक सम्राट के झण्डे के नीचे एक संघशासन (Federal State) की स्थापना कर डाली थी। श्रीकृष्ण स्वयं राजा न थे। किन्तु राजा-निर्माता अवश्य थे। उग्रसेन को कंस वध के पश्चात राजा इन्होंने बनाया था। जरासन्ध की मृत्यु के पश्चात उसके पुत्र सहदेव को मगध का राजा इन्होंने बनाया था। युधिष्ठिर का राज भी तो इन्हीं का निर्माण था। युधिष्ठिर ने अश्वमेघ यज्ञ किया, वे सम्राट भी हुए किन्तु श्री कृष्ण ने युधिष्ठिर के साम्राज्य को संघीय स्वरुप दिया। युधिष्ठिर के साम्राज्य का प्रत्येक राज्य अपनी आन्तरिक राजनीति, परम्परा व्यवस्था, आर्थिक विकास, शिक्षा सभ्यता, रहन-सहन में पूर्ण स्वतन्त्र था। यह प्रत्येक राज्य की आंचलिक स्वयत्तता के साथ सम्पूर्ण भारतवर्ष को एक राष्ट्र में आबद्ध कर महाभारत बनाने की योजना श्रीकृष्ण का राजनीतिक उद्देश्य था। यह उनका महाभारत बनाने का नेतृत्व था।

श्रीकृष्ण चरित्र की अल्पज्ञात घटना- सामान्य रुप में श्री कृष्ण वेद, वेदांग, विज्ञान आदि के विद्वान अप्रतिम योद्धा थे। श्रीकृष्ण अद्भुत, सदाचारी, ब्रह्मचारी, तपस्वी महापुरुष थे। अपने पुत्र प्रद्युम्न के जन्म के सम्बन्ध में एक रहस्य का उद्घाटन श्री कृष्ण ने स्वयं ही सौप्तिक पर्व में किया है-

ब्रह्मचर्य महद् घोरं चीर्त्वा द्वादश वार्षिकम्।
हिमवत् पार्श्वमभ्येत्य यो मया तपसार्जित:।।
समान व्रतचाणियां रुक्मिण्यां योऽन्वजायत।
सनतकुमार तेजस्वी प्रद्युम्नो नाम मे सुत:।।

अ. 12/30-31

इन श्लोकों का भाव यह है कि श्रीकृष्ण ने अपनी पत्नी रुक्मिणी के साथ हिमालय की तराई में 12 वर्षों का महान् घोर ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके तपस्या की और रुक्मिणी ने भी समान रुप से व्रत के अनुष्ठान में साथ तपस्या की। फिर दोनों ने सनत् कुमार जैसे तपस्वी प्रद्यम्न नामक पुत्र उत्पन्न किया।

ऐसे चरित्रवान योगेश्वर श्रीकृष्ण के चरित्र में रासलीला का प्रसंग प्राणयुग के रसिक कथाकारों की रसिक कल्पना मात्र है। श्रीकृष्ण का योगेश्वर योद्धा चक्र सुदर्शनधारी आदि स्वरुप पर निदर्शन महाभारत में मिलता है। श्रीकृष्ण के जीवन से अधिक उनके गीतागायक स्वरुप ने संसार को प्रभावित किया। श्रीमदभागवत् गीता में श्रीकृष्ण के योग, ज्ञान, कर्म और भक्ति के उपदेशों का बहुत सुन्दर वर्णन है। श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व का योगेश्वर स्वरुप बड़ा मनमोहक है। संजय ने गीता के अन्तिम श्लोक में बहुत सुन्दर कहा है-

यत्र योगेश्वर: कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धर:। तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।। गीता-18-78

जहां, जिस पक्ष में योगेश्वर श्रीकृष्ण है, जिस पक्ष में धनुर्धर अर्जुन है, उसी पक्ष में श्री, विजय, भूति और ध्रुवनीति है, यही मेरी सम्मति है।

जन्माष्टमी पर हम योगेश्वर श्रीकृष्ण की वन्दना करते है। - **ईशावास्यम्**

पी-30, कालिन्दी, कोलकाता- 700079

आर्यसमाज को संगठनबद्ध करने तथा वर्तमान परिस्थितियों में आर्यसमाज के कार्यों को गति देने हेतु

क्षेत्रीय विचार गोष्ठियों का आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की गत अन्तरंग सभा बैठक दिनांक 3 अगस्त, 2014 में लिए गए निर्णय के अनुसार दिल्ली की समस्त आर्य समाजों के अधिकारियों, सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं को आर्यसमाज के कार्य, गतिविधियों, संगठन सम्बन्धी जानकारी देने के उद्देश्य से विभिन्न क्षेत्रीय गोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है। बैठक मे लिए गए निर्णय के अनुसार उत्तरी दिल्ली में एक, उत्तर-पश्चिम में एक, पश्चिम दिल्ली में दो, दक्षिण दिल्ली में दो, पूर्वी दिल्ली में एक तथा मध्य दिल्ली में भी एक बैठक आयोजित की जाएंगी।आर्यसमाजों के समस्त अधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं सदस्यों से निवेदन है कि वे अपने क्षेत्रानुसार बैठक में अवश्य ही पधारकर संगठन शक्ति का परिचय दें। बैठक का दिन, समय, स्थान एवं संयोजक निम्न प्रकार निश्चित किए गए हैं। समस्त उपस्थित सदस्यों के लिए सायंकालीन भोजन की व्यवस्था आर्यसमाज की ओर से की जाएगी। - **विनय आर्य, महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मो. 9958174441**

उ. पश्चिम दिल्ली

स्थान : आर्यसमाज सरस्वती विहार
दिनांक : 7 सितम्बर, 2014 (रवि)
समय : दोपहर 2:30 से सायं 7 बजे
संयोजक : श्री सुरेन्द्र गुप्ता
मो. 9811476663

पूर्वी दिल्ली क्षेत्र

स्थान : आर्यसमाज प्रीत विहार
दिनांक : 13 सितम्बर, 2014 (शनि)
समय : दोपहर 2:30 से सायं 7 बजे
संयोजक : श्री सुरेन्द्र रैली
मो. 9810855695

मध्य दिल्ली

स्थान : आर्यसमाज हनुमान रोड
दिनांक : 21 सितम्बर, 2014 (रवि)
समय : दोपहर 2:30 से सायं 7 बजे
संयोजक : श्री अरुण वर्मा
मो. 9540086759

पश्चिमी दिल्ली -1

स्थान : आर्यसमाज कीर्ति नगर
दिनांक : 5 अक्तूबर, 2014 (रवि)
समय : दोपहर 2:30 से सायं 7 बजे
संयोजक : श्री ओम प्रकाश आर्य
मो. 9540077858

पश्चिमी दिल्ली -2

स्थान : आर्यसमाज जनकपुरी सी-3
दिनांक : 12 अक्तूबर, 2014 (रवि)
समय : दोपहर 2:30 से सायं 7 बजे
संयोजक : श्री शिव कुमार मदान
मो. 9310474979

दक्षिण दिल्ली-1

स्थान : आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-1
दिनांक : 26 अक्तूबर, 2014 (रवि)
समय : दोपहर 2:30 से सायं 7 बजे
संयोजक : श्री राजीव चौधरी
मो. 9810014097

विशेष सूचना - उत्तरी दिल्ली, ग्रामीण दिल्ली एवं दक्षिण दिल्ली -2 क्षेत्र में आयोजित होने वाली गोष्ठियों के आयोजन की तिथि एवं स्थान सूचना आर्यसन्देश के आगामी अंकों में प्रकाशित की जाएगी। समस्त आर्यसमाजों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि वे अपने क्षेत्र की गोष्ठी में अपने सहयोगियों के साथ अवश्य ही भाग लें। - विनय आर्य, महामन्त्री, 9958174441

एम.डी.एच. वेद प्रचार वाहन उपलब्ध

सभा द्वारा संचालित एम.डी.एच. वेद प्रचार वाहन की सेवाएं भी इस अवसर पर प्रचारार्थ उपलब्ध रहेंगी। वेद प्रचार मंडलों से निवेदन है कि वेद प्रचार वाहन अपने यहां मंगवाकर प्रचार कार्य करें। प्रचार वाहन मंगाने हेतु श्री एस.पी. सिंह(9540040324) से सम्पर्क करें।

स्वाधीनता दिवस पर विशेष

67 साल हो गया.....

हे ईश मेरे देश का, क्या हाल हो गया।
माँ भारती का रूप, क्यों बदहाल हो गया।।

धानों की फलती बालियाँ, आमों की लदती डालियाँ।
दुग्धों की बहती नालियाँ, माखन की लुटती प्यालियाँ।
ड्रिंकों की अंधी दौड़ में, गोपाल खो गया।।
माँ भारती.....

स्वाहा-स्वधा का घोष यहाँ, बजता था रात-दिन।
कान्हा की मीठी तान सुन, होता था मन प्रसन्न।
धम-धम धमाका धाँय में, स्वर ताल खो गया।।
माँ भारती....

हाथों पर रख कर रोटियाँ, खाते यहाँ के लोग।
खुश होके सबको बाँटते, प्रभु का लगाके भोग।
मोमोज, पिज्जा, बर्गर में, पुआ-माल खो गया।।
माँ भारती.....

सुनकर के मीठी बोलियाँ, अतिथि भी रोज आते।
दो घूँट पीके जल का भी, आशीष देके जाते।
डाई व टाई वेश में, वृद्ध बाल खो गया।।
माँ भारती....

करतीं थी सारे काम, यहाँ खुद बहू बेटियाँ।
भरतीं थीं सबके पेट, पर न भरतीं पेटियाँ।
धोती को जीन्स ले गयी, ससुराल खो गया।।
माँ भारती.....

रो-रोके माता एक दिन, मुझसे लिपट गयीं।
हे विमल अब बचा मुझे, मैं पूरी लुट गयी।
कर मुक्त बेड़ी खोल सडसठ साल हो गया।
माँ भारती.....

-विमलेश बंसल 'आर्या', 329 द्वितीय तल,
संत नगर, पूर्वी कैलाश, नई दिल्ली-110065

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सिंगापुर-बैंकॉक - 2014

सिंगापुर 1 -2 नवम्बर एवं बैंकाक 8 -9 नवम्बर 2014

कुछ ही सीटें शेष - सम्मेलन में जाने के इच्छुक आर्यजन शीघ्र आवेदन भेजें

सम्माननीय आर्यबन्धुओ!

आपको यह सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली** के तत्त्वावधान में इस वर्ष **अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सिंगापुर-थाईलैंड - 1 तथा 2 नवम्बर 2014 को सिंगापुर** में तथा **8 और 9 नवम्बर 2014 को थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक** में सम्पन्न होने जा रहा है। इस सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये अनेक देशों के प्रतिनिधि सिंगापुर तथा बैंकाक पहुँचेंगे। भारतवर्ष से भी इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु बड़ी संख्या में आर्यजन पहुँचेंगे। जो आर्यजन इस सम्मेलन में भाग लेना चाहते हैं वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के माध्यम से ही भाग ले सकेंगे। **सार्वदेशिक सभा के द्वारा स्वीकृत सदस्यों को ही सिंगापुर तथा बैंकॉक की आर्यसमाजें अपने यहाँ प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार कर उनकी व्यवस्था करेंगी।** अनेकों आर्यजन इस अवसर पर दक्षिण पूर्व एशिया महाद्वीप का भ्रमण भी करना चाहते है, इसलिये उनकी भावनाओं को ध्यान में रखते हुए सिंगापुर तथा थाईलैंड के अत्यन्त रमणीय एवं महत्त्वपूर्ण स्थानों की यात्रा का भी रोचक कार्यक्रम बनाया गया है।

आवेदन पत्र www.thearyasamaj.org पर उपलब्ध है। - *आर्य सुरेश चन्द्र अग्रवाल, यात्रा संयोजक*

।। ओ३म्।।

गुरुकुल के आयुर्वेदिक उत्पाद खरीदें गुरुकुल परम्परा को आगे बढ़ाएँ

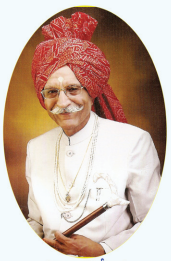

महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष, गु.कांगड़ी फार्मेसी

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी
आपकी अपनी फार्मेसी

प्रमुख उत्पाद

गुरुकुल चाय, पायोकिल मंजन, च्यवनप्राश, मधुमेह नाशिनी, मधु (शहद), ब्राह्मी रसायन, आंवला रस, आंवला कैंडी, गुरुकुल शिलाजीत, द्राक्षारिष्ठ, रक्त शोधक, अश्वगंधारिष्ठ, सफेद सुरमा, गुलकन्द, महाभृंगराज तैल

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार, पो. गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) -249404
फोन - 0134-416073, 09719262983 (व्यावसायाध्यक्ष)

पृष्ठ 2 का शेष

नियंत्रण में करना। यह काबू करना मन के लिए है। मन काबू में हो जाए तो सब सिद्ध हो जाता है। 'मन के साधे सब सधै' की कहावत में भी किसी का यही अनुभव बोलता है। इन्द्रिय निग्रह' काअर्थ है इंद्रियों को विशेष रूप से थाम कर या पकड़कर रखना। 'निग्रह' कुछ वैसा ही ज्ञाब्द है जैसा पशु का 'प्रग्रह' या 'पगहा' होता है अर्थात् पशु के गले की वह मोटी रस्सी जिससे पशु को खूंटे से बांधकर उसकी गतिविधियों को सीमित कर देते है ताकि वह बेकार में भटकता, धमा-चौकड़ी करता, तोड़-फोड़ करता न घूमे और आवश्यकता पड़ने पर खोलकर उसका उपयोग किया जा सके। इसी प्रकार इंद्रियों का उपयोग भी मनुष्य अपने हित साधन में करे और अहित करने वाली उनकी धमाचौकड़ियों को रोके।

लेकिन इंद्रियों पर और मन पर काबू करना कोई सरल काम नही है। सारा धार्मिक चिंतन इन्हें काबू करने के उपायों के इर्द-गिर्द घूमता है। इन्हे काबू करने में जहां हमारी एषणाएं, अहंकार, राग-द्वेष तथा लोभ-मोह आदि बाधक है वहीं हमारी आधुनिक सामाजिक व्यवस्था और अर्थतंत्र भी बाधक है। अर्थशास्त्री कहेगा इच्छाएं सीमित करने से उत्पादन कम हो जाएगा, विकास रुक जाएगा, राष्ट्रीय आय घट जाएगी, देश पिछड़ जाएगा आदि। अर्थतंत्र इस बात को नहीं सोचता कि जिसके लिए यह उत्पादन हो रहा है, विकास हो रहा है उस मनुष्य पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है। वह बाहरी चमक-दमक, घर में भरे उपकरणों या अन्य उत्पादनों में ही व्यक्ति का सुख-चैन खोज लेता है। इन उत्पादनों के लिए मारा-मारी, व्यापारिक स्पर्धा तथा आर्थिक रूप से एक-दूसरे से आगे निकल जाने की अंधी दौड़ मनुष्य को कितना परेशान, छल-कपट से परिपूर्ण और साधन जुट जाने के बाद भी कितना विकल कर देते हैं इसकी तरफ अर्थतंत्र का ध्यान ही नहीं जाता। यह व्यापार तंत्र अत्यंत मोहक और अनेक बार कामुक विज्ञापनों के द्वारा मनुष्य में आवश्यकता या इच्छा न होने पर अपने उत्पादनों की खपत के लिए आवश्यकता और इच्छा पैदा करता है। सारा व्यापार तंत्र इन इच्छाओं को बढ़ाकर ही पनप रहा है। उसका उद्देश्य माल बेचना है इससे आगे की सोच से उसका कोई संबंध नहीं।

धर्म शास्त्र व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताएं पूरी होने के बाद की बात भी सोचता है। इतना ही नहीं वह मूलभूत आवश्यकताएं पूरी न होने की स्थिति में भी जीवन जीने की कला सिखाता है जो उसे कष्टों को झेलने और उनसे निकलने की क्षमता जुटाती है। धर्मशास्त्र कहता है कि जिस प्रकार जीवन में साधन-हीनता कष्ट दायी है उसी प्रकार अति साधन सम्पन्नता भी दुखदायी है। यदि ऐसा न होता तो बड़े-बड़े सम्पन्न एवं समृद्ध व्यक्तियों को हृदयाघात न होता और वे नींद की गोलियां लेकर न सोते। अत्यधिक धन, उसके छिन जाने की आशंका, परिणामत: उस की रक्षा के उपाय, उसके निवेश और फिर से निवेश करने का चक्कर, आयकर अथवा अन्य संबद्ध अधिकारियों का भय आदि उसे बेचैन एवं तनाव ग्रस्त बनाए रखते है।

धर्म-दर्शन आवश्यकता पूरी होने पर धन के उपार्जन का विरोध नहीं करता लेकिन ऐसी स्थिति में वह व्यक्ति को अपनी दृष्टि बदल लेने की सीख अवश्य देता है। उसका कहना है कि एक सीमा के बाद अपने लिए नहीं, समाज और राष्ट्र के लिए कमाओ। अपनी सामान्य भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद, जितने धन का आप उपभोग कर सकते हैं उसके बाद, जो कुछ बचता है या जो कमाते हो वह समाज और राष्ट्र को अर्पित कर दो। ऐसी स्थिति में आप का उद्देश्य उदात्त हो जाएगा। तनाव की जगह प्रसन्नता पैदा होगी, संतोष उपजेगा और सूखता-मुरझाता जीवन लहलहाने लगेगा। उदाहरण के लिए संसार में कितने ही ऐसे उद्योगपति है जिनके पास इतना अपार धन है कि वे व्यक्तिगत और पारिवारिक स्तर पर उसका उपभोग नहीं कर सकते। प्रश्न पैदा होता है फिर वे उस धन का क्या करें? वे देश-विदेश में दूसरे उद्योगों या कम्पनियों को खरीदते हैं और विश्व का सबसे बड़ा उद्योगपति बनने का प्रयत्न करते है। अगर कहीं इस प्रयत्न में असफल हो जाते है या उनकी किसी कम्पनी में घाटा हो जाता है तो उन्हे तनाव होता है, दुख होता है। उनके पास तो अपार धन था उस थोड़े से घाटे से या विस्तार रुक जाने से उनके रहन-सहन में तो कोई अंतर आएगा नहीं। फिर दुख और तनाव क्यों हुआ? सिर्फ इसलिए कि उनकी इच्छा पूरीनहीं हुई। संसार का या अपने उद्योग-जगत का नंबर एक बनने का स्वप्न साकार नहीं हुआ। स्पष्ट है यह दु:ख आर्थिक कारण से नहीं असीमित इच्छाओं की पूर्ति न होने से हुआ। इसलिए धर्मशास्त्र कहता है उस अतिरिक्त धन को मानवमात्र के कल्याण के लिए अर्पित कर दो। आपका उससे निजी संबंध टूट जाएगा, वह धन स्वार्थ मुक्त हो जाएगा। किसी आत्मीय सगे या संबंधी की मृत्यु पर दुख होता है किसी दूसरे स्थान के असबद्ध एवं अनजाने व्यक्ति के मरण पर हम दुखी नहीं होते। इसी प्रकार जब आपके कर्मस्वार्थ से मुक्त होकर समाज को समर्पित हो जाएंगे तो वे सुख का कारण बन जाएंगे।

आप भी आवश्यकता से अधिक धन-संपत्ति को, स्वेच्छा से, परहित में लगा दें। आपके मन को उस खुशी से ज्यादा खुशी मिलेगी जितनी उस धन को अपने कब्जे में रखने पर मिल रही थी। आपको अपने जीवन की सार्थकता दिखाई देने लगेगी। संसार में अनेक लोग ऐसा करते है। विश्व के सर्वाधिक धनी व्यक्तियों में से एक वारेन बफे (Warren Buffect) ने अरबों डॉलर, अपने मित्र और कम्प्यूटर जगत के बेताज बादशाह अमरीकी उद्योगपति बिल गेट्स कीपरोपकारी संस्था 'बिल एंड मिलंडा गेट्स फाउण्डेशन' को दे दिए थे। उसने इस अहं भाव को भी नहीं पाला कि मैं स्वयं अपनी संस्था बनाऊंगा और तब मानव सेवा करूंगा।

अगर अकूत धन की दिशा (Channel) बदलकर आप उसे जनहित की तरफ नहीं मोड़ेंगे और उससे बड़ी और बड़ी इच्छाओं की पूर्ति करने में ही जुटे रहेंगे तो निश्चित जानिए कि इच्छाएं कभी समाप्त नहीं होंगी। जीवन के अंतिम क्षणों में आपको अपने ही निर्णयों पर, अपनी ही वृत्तियों पर पछतावा होगा और लगेगा कि इतने सारे साधन होने के बावजूद जीवन व्यर्थ गंवा दिया। इच्छाएं पूर्ति की इस असंभवता को विचारकों ने बहुत पहले ही जान लिया था। आशाएं हमारा पीछा कभी नहीं छोड़ती, इसी सत्य का उद्घाटन करते हुए 'मोहमुद्गर' नामक ग्रंथ में कहा गया है -

अडग, गलितं पलितं मुण्डम्, दन्तविहीनं जातं तुण्डम्। करधृत कम्पित शोभित दण्डं, तदपि न मुञ्चति आशा पिण्डम्।

अर्थात्- शरीर जीर्ण हो जाता है, बाल पक जाते हैं, मुंह में दाँत नहीं रहते,(सहारे के लिए) हाथ में धारण की हुई लाठी कांपने लगती है लेकिन फिर भी अपेक्षाएं-इच्छाएं इस शरीर को नहीं छोड़ती। संदेश स्पष्ट है बढ़ती ऊर्जा के साथ सांसारिक इच्छाएं पूरी हों और घटती ऊर्जा के साथ उनसे विरक्ति होती जाए। यही सहज मार्ग है। जब आप संसार से जाएं तो मन में कोई इच्छा न हो, मात्र उस प्रभु का धन्यवाद हो।

भर्तृहरि ने 'वैराग्य शतक' में इसी भाव को और भी स्पष्ट शब्दों में कहा है:

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता, तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा तपो न तप्तं वयमेव तप्ता:, कालो न यात: वयमेव यात:। अर्थात्- बहुत भोगने के बाद भी भोग तो नहीं भोगे जाते बल्कि हम ही भोग लिए जाते है। बहुत पूरी करने के बाद भी तृष्णाएं तो जीर्ण नहीं होती बल्कि हम ही जीर्ण हो जाते है। तप नहीं तपे जाते बल्कि हम ही तप जाते है, काल तो नहीं बीतता बल्कि हम ही बीत जाते हैं। इसलिए इच्छाओं के जाल से निकलने की कोशिश करो। काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि इच्छाओं के ही रूपांतरण है। इच्छाओं से मुक्त होना ही बंधनों से मुक्त होना है। जो बंधनों में बंधा है वह मृत्यु के समय दुखी होगा। संसार को शांति से नहीं छोड़ सकेगा। कल्पना कीजिए आपके हाथ-पांव बंधे हैं और कोई आपका हाथ पकड़कर कहता है, "चलिए, मेरे साथ जल्दी चलिए" भला बंधनों को खोले बिना कैसे चल सकेंगे। खींचने वाला बलवान है, चलना तो पड़ेगा ही। चल पाओगे नहीं, घिसटोगे, हाथ-पांव टूटेंगे। दुर्गति होगी। इसलिए बंधनों को पैदा मत करो। पैदा हो गए हों तो उनसे मुक्त हो जाओ। ले जाने वाला जब हाथ पकड़कर चलने को कहे तो फटाफट भागे चले जाओ। कोई कष्ट नहीं होगा। लेकिन इसके लिए बहुत पहले से तैयारी की जरूरत है।

कबिरा कहा गरबियौ, काल गहे कर केस। नां जाणौ कहां मारिसी, कै घरि कै परदेस।।

जीवन की गाड़ी कभी भी छूट सकती है। इसलिए जाने की पूरी तैयारी रखें। तैयारी नहीं होगी और मोह-ममत्व तथा एषणाओं के जाल में फंसे रहोगे तो गड़बड़ हो जाएगी। हड़बड़ी में भागना पड़ेगा। बंधन रोकेंगे और ले जाने वाला रुकेगा नहीं। दु:ख होगा। चिल्लाओगे-हाय! मेरा यह रह गया, वह रह गया, अमुक काम अधूरा रह गया। मुहल्लत मांगेंगे पर मिलेगी नहीं। भय लगेगा। स्कूल जाने से वही बालक डरता है जिसने होमवर्क नहीं किया हो। आयकर अधिकारी को देखकर वहीं व्यापारी भयभीत होता है जिसके बही खातों में गड़बड़ हो, जिसने टैक्स न चुकाया हो और मौत को सामने देखकर वहीं रोता-पीटता है जिसने चलने की तैयारी पूरी की हो और याद रखे यह तैयारी साधनों की नहीं होती, मानसिक होती है।

- एम-93, साकेत
नई दिल्ली - 110017

प्रतिदिन यज्ञ करते हुए भी .....

पृष्ठ 3 का शेष

हानि पहुंचा सकती हैं। आठ अंगुल की तीन समिधा दो चप्पे अर्थात आठ अंगुल की ही होनी चाहिए।

छाल सहित समिधा पूर्ण लाभ देती है परन्तु प्रयोग करने से पूर्व सदा अच्छी तरह से झाड़ ले। एक बात सदा ध्यान में रखें कि समिधा न तो आवश्यकता से कम जलाएं एवं न ही आवश्यकता से बहुत अधिक जलाकर वृक्षो व शरीर को हानि पहुंचाए। वृक्षों की समिधाओं के अभाव में स्वदेशी गाय के गोबर को चीकने तल पर बिछाकर जिसकी मोटाई एक अंगूल के लगभग हो पुन: गीले-गोले फैले हुए गोबर पर चाकू से एक-एक इंच के अन्तर पर गहरी लाईने लगा दें। धूप में सूखने पर आप को ठीक माप की समिधा प्राप्त होंगी। यह अनुभूत प्रयोग है हमारा। मूंग, उड़द, सामग्री महर्षि दयानन्द निर्दिष्ट हो उसमें तत्व के अनुसार तिल, व जौ मिलाएं। अपने पारिवारिक रोगों के अनुसार उन जड़ी-बूटियों को अधिक मात्रा में मिलायें। जाडों दर्दों में हार सिंगार फूल व पत्ते, अश्वगंध, गुग्गल, हल्दी, मेथी डालें। स्मरण शक्ति हेतु ब्रह्मी, शेखावली, डिप्रेशन अलर्जी व नेत्र ज्योति हेतु त्रिफला, चन्दन, बादाम पेट के रोगों हेतु बिल्व, लाई, अमलतासा आदि। सामाग्री में हमेशा इतना घृत हो कि डालते समय उड़े नहीं। सामाग्री घृत डालने के अनुपात में हो। दो घृत वाले तो तीन 6-6 मासा सामग्री वाले। मन्त्रों को बोलते समय अनेक दूर बैठे लोगों द्वारा एकत्रित की गई सामाग्री को एक दम डालने से पूर्ण लाभ नहीं होता। दो आहुतियों में एक मंत्रों का अन्तर हो, जिससे वह पूर्ण जल सके एवं पूर्ण लाभ दे सके यज्ञ में श्रुति मन्त्रपाठ का प्रमाण है शीघ्रता (जल्दी-जल्दी) संख्या पूर्ण करने के चक्कर में मंत्र बोलने एवं यज्ञ करने से लाभ न हो कर मानसिक हानि होती है। जिसमें चारों ओर से पूर्ण वायु आकर अग्नि को ठीक जलाएं एवं निरोगी पाठय का निर्माण करें। कुण्ड के बीच ढ़ेरी बनकर एकत्रित न हो घृत पहले पिछला, 6 मासा, केसर व जावित्री युक्त हो सम्भव हो तो गाय का ही हो।

- उद्गीथ स्थली, डोहर (हि.प्रदेश)

आर्यसमाज पंखा रोड 'सी' ब्लाक
जनकपुरी नई दिल्ली का
श्रावणी/वेद प्रचार पर्व
10 अगस्त से 17 अगस्त 2014
प्रवचन : आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय
भजन : श्री सहदेव बेधड़क
समापन समारोह एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
17 अगस्त, 2014
– अजय तनेजा, मन्त्री

आर्यसमाज हनुमान रोड का
वेद प्रचार समारोह
10 अगस्त से 18 अगस्त 2014
प्रवचन : आचार्य इन्द्रदेव जी
भजन : श्री राजवीर शास्त्री
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी : भाषण प्रतियोगिता
18 अगस्त : प्रातः 10:30 बजे
विषयः 'आर्य संस्कृति के संरक्षक योगिराज श्रीकृष्ण'
– दयानन्द यादव, मन्त्री

आर्यसमाज गोविन्दपुरी का
वेद प्रचार सप्ताह
11 अगस्त से 17 अगस्त 2014
प्रवचन : आचार्य विश्वव्रत वाजपेयी
भजन : श्री सहदेव सरस
समापन समारोह 17 अगस्त, 2014
सम्मेलन : प्रातः 9:45 से 1:30 बजे
विषय : धार्मिक आतंकवाद देश के लिए खतरा
अध्यक्षता : श्री प्रियव्रत जी
मुख्य अतिथि : श्री रमेश बिधुड़ी (सांसद)
जन्माष्टमी सायं 7:30 से 9:30 बजे
– सुरेशचन्द्र गुप्ता, मन्त्री

आर्यसमाज सागरपुर में
श्रावणी पर्व के अवसर पर
संगीतमय वेदकथा
22 अगस्त से 24 अगस्त 2014
यजुर्वेद शतकम यज्ञ : प्रातः 6:30 बजे
भजन व वेदकथा : पं. देशराज (सत्येच्छु)
समापन समारोह 24 अगस्त, 2014
यज्ञ : प्रातः 7 से 8:15 बजे
भजन–प्रवचन : प्रातः8:15–10 बजे
सायं 6 से 9:30 बजे
प्रीतिभोज : रात्रि 9:30 बजे
– मानधाता सिंह, मन्त्री

आर्यसमाज सुन्दर विहार द्वारा श्रावणी उपाकर्म एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर
वार्षिक गायत्री महामन्त्र जप एवं यज्ञ
10 अगस्त से 17 अगस्त, 2017 : समुदाय भवन, सुन्दर विहार
ब्रह्मा : आचार्य लक्ष्मण कुमार शास्त्री व्याख्यान : आचार्य योगेन्द्र शास्त्री
समय : प्रातः 7:30से 10:30 बजे
– अमरनाथ बत्रा, मन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा – हैल्प लाइन
समस्या समाधान/जानकारी हेतु किससे सम्पर्क करें?

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा–15 हनुमान रोड, नई दिल्ली ने दिल्ली की आर्यसमाजों/आर्य शिक्षण संस्थाओं/आर्यजनों तथा आर्यसन्देश के माननीय सदस्यों के लिए हैल्पलाइन सुविधा आरम्भ की है। आप अपनी समस्या/सम्बन्धित जानकारी के लिए दोपहर 12:30 से सायं 7:30 बजे तक किसी भी कार्य दिवस में निम्न महानुभावों से सम्पर्क कर सकते हैं। यदि आपकी समस्या सुनी नहीं जाती है तो कृपया अपनी समस्या तथा किससे सम्पर्क किया गया, उसका विवरण aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें–

वैदिक प्रकाशन/विक्रय विभाग –	श्री विजय आर्य (9540040339)
आर्यसन्देश न मिलने पर –	श्री एस. पी. सिंह (9540040324)
भजनोपदेशक/उपदेशक सेवा –	श्री ऋषिदेव आर्य (9540040388)
मुकदमा/कानूनी सहायता –	श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता (9212082892)
वैवाहिक परिचय सम्मेलन आयोजन हेतु–	श्री अर्जुन देव चड्ढा (9414187428)
दिल्ली वैवाहिक परिचय जानकारी हेतु –	श्री एस. पी. सिंह (9540040324)
दशांश–वेद प्रचार/प्रशासनिक कार्य –	श्री अशोक कुमार (9540040322)

– विनय आर्य, महामन्त्री (9958174441)

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन में
9वां आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन
28 सितम्बर, 2014 : आर्यसमाज मल्हारगंज, इन्दौर (म.प्र.)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) द्वारा मध्य भारत आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से 9वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन **28 सितम्बर, 2014 को आर्यसमाज मल्हारगंज इन्दौर (म.प्र.)** में आयोजित किया जाएगा। जो आर्य महानुभाव विवाह योग्य अपने पुत्र/ पुत्रियों का पंजीकरण कराना चाहते हैं, वे पंजीकरण फार्म सभा कार्यालय से मंगा सकते हैं अथवा सभा की वैबसाइट www. thearyasamaj.org से डाउनलोड कर सकते हैं। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम प्रति सम्मेलन **200 रुपये (दो सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट** संलग्न कर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1'** के पते पर भेज दें। जिन आर्य बन्धुओं के आवेदन पत्र **8 सितम्बर, 2014** तक हमारे कार्यालय में प्राप्त हो जाएंगे उनके ही परिचय आर्य युवक–युवती परिचय दिग्दर्शिका में प्रकाशित हो सकेंगे। **सम्मेलन के आयोजन के दिन भी तत्काल पंजीकरण की सुविधा उपलब्ध होगी।** तत्काल पंजीकरण कराने वाले आर्य युवक–युवतियों के नाम सप्लीमैंट्री पुस्तिका में प्रकाशित किए जाएंगे जोकि सभी प्रतिभागियों को 10 अक्तूबर, 2014 के बाद ही भेजी सकेगी। **श्री अर्जुनदेव चड्ढा,** राष्ट्रीय संयोजक (09414187428)

आर्यसमाज कालकाजी ए ब्लाक,
नई दिल्ली–19 का
श्रावणी पर्व एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
18 अगस्त से 24 अगस्त 2014
यज्ञ : प्रतिदिन प्रातः 7 से 8:15 बजे
ब्रह्मा : आचार्य अवधेश कुमार शास्त्री
वेद कथा : प्रो. धर्मवीर जी
भजन : श्रीमती सिमी सचदेवा, उषा सूद एवं श्री व्यास देव लूथरा
भजन–प्रवचन : सायं 6:30 से 8:30
पूर्णाहुति एवं विशेष सम्मेलन : 27 अगस्त
समय : प्रातः 7:30 से 1 बजे
– राकेश भटनागर, मन्त्री

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज बिडला लाइन्स कमला नगर, दिल्ली–7
प्रधान : श्री योगेश कुमार आर्य
मन्त्री : श्री नरेन्द्र आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री विश्वनाथ बंका

आर्यसमाज किदवई नगर नई दिल्ली–23
प्रधान : श्री हरिसिंह पुरोहित
मन्त्री : श्री सुशील कुमार मौर्य
कोषाध्यक्ष : श्री आनन्द प्रकाश आर्य

आर्य पुरोहित सभा, मुम्बई
प्रधान : पं. नामदेव आर्य
मन्त्री : श्री नरेन्द्र शास्त्री
कोषाध्यक्ष : श्री विनोद कुमार शास्त्री

संस्कृत सम्भाषण शिविर

आर्यसमाज बीकानेर में 10 दिवसीय निःशुल्क संस्कृत सम्भाषण शिविर 14 से 23 जुलाई तक सम्पन्न हुआ जिसमें प्रतिदिन 18 से 25 तक प्रशिक्षणार्थी सम्मिलित हुए। समापन समारोह 23 जुलाई के अवसर पर संस्कृत महाविद्यालय बीकानेर के प्रचार्य श्री रामगोपाल शर्मा ने प्रश्नोत्तर के माध्यम से शिविरार्थियों का अध्ययन का आंकलन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता राजकीय डूंगर महाविद्यालय बीकानेर की डॉ. नन्दिता सिंघवी ने की। इस अवसर पर सभी शिविरार्थियों को महर्षिकृत व्यवहार भानु पुस्तक भेंट की गई।– *महेश सोनी, मन्त्री*

आवश्यकता है

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को विभिन्न विषयों पर लेख लिखने एवं सम्पादन कार्य में रूचि रखने वाले आर्य युवा लेखकों की आवश्यकता है। गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त विद्वानों को प्राथमिकता दी जाएगी। इच्छुक महानुभाव अपने बायोडाटा ईमेल/डाक द्वारा भेजें।

महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15– हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001
ईमेल : aryasabha@yahoo.com

ब्रेल लिपि में
महर्षि दयानन्द जीवनी
मात्र 1000/–रु
अपने क्षेत्र के नेत्रहीनों/अंध विद्यालयो को अपने आर्यसमाज की ओर से भेंट करें।

शोक समाचार

श्री राजबहादुर शर्मा का निधन

आर्यसमाज सन्त रविदास नगर (जहांगीरपुरी) के कोषाध्यक्ष श्री राजबहादुर शर्मा जी का दिनांक 7 अगस्त को लगभग 64 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से स्थानीय श्मशानघाट पर किया गया। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा दिनांक 19 अगस्त, 2014 को उनके निवास – जे –1604, जहांगीर पुरी दिल्ली–33 पर आयोजित की जाएगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक–संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। –सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 11 अगस्त, 2014 से रविवार 17 अगस्त, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 14 /15 अगस्त, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 13 अगस्त, 2014

"वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" महर्षि दयानन्द जी के इस वचन को पूरा करने के लिए और परमात्मा की पावन वाणी को हर घर तक पहुंचाने के उद्देश्य से चारों वेदों की ओडियो डी.वी.डी. तैयार की गई है। यह कार्य विश्व के इतिहास में पहली बार हुआ है जबकि चारों वेदों (ऋग्, यजु, साम, अथर्व) को ऑडियो डी.वी.डी. में डेढ़ वर्ष के कठिन परिश्रम तथा उच्च कोटि के विद्वानों के निरीक्षण में अत्यन्त सावधानी पूर्वक तैयार की गई है। **362 घंटे** की इस डीवीडी पर 1000/- रुपये लागत आ रही है जबकि वेदों को हर घर तक पहुंचने के उद्देश्य से यह **डीवीडी मात्र 500/- रुपये** की सहयोग राशि में उपलब्ध कराई जा रही है। वेद का प्रचार-प्रसार करना ऋषियों ने परम पुरुषार्थ माना है। अत: इसी समय चारों वेदों की ऑडियो डी.वी.डी. प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-

वैदिक प्रकाशन विभाग,
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001,
फोन - 011-23360150, 9540040339

आर्यजन ध्यान दें

समस्त आर्य परिवारों से निवेदन है कि यदि आपके कोई सम्बन्धी/रिश्तेदार/परिचित या आर्य विचारधारा से प्रेरित कोई व्यक्ति भारत के अन्दमान-निकोबार, लक्ष्यद्वीप या गोवा में रहते हैं अथवा नौकरी करते हैं तो कृपया उनका नाम, पता, दूरभाष तथा ईमेल हमें भेजने की कृपा करें ताकि उनसे सम्पर्क करके यहां आर्यसमाज की स्थापना का प्रयास किया जा सके।-*मन्त्री, सार्वदेशिक सभा*
ईमेल : aryasabha@yahoo.com

वैचारिक क्रान्ति के लिए "सत्यार्थ प्रकाश" पढ़ें

दैनिक
याज्ञिकों/आर्यसमाजों के
लिए खुशखबरी

MDH

हवन सामग्री
मात्र 70/- किलो
(5,10, 20 किलो की पैकिंग में)

-: प्राप्ति स्थान :-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली -1, दूरभाष - 23360150

अपना सर्वस्व कार्य हिन्दी में ही करें

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा जम्मू-कश्मीर आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से
सार्वजनिक स्थलों पर साहित्य प्रचार

श्रीनगर पुस्तक मेला

स्थान : प्रदर्शनी मैदान, कश्मीर हाट, श्रीनगर (ज.क.)

23 से 31 अगस्त, 2014 : प्रात : 11 बजे

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन करें तथा अधिकाधिक संख्या में जन सामान्य को पुस्तक मेले में सभा के साहित्य प्रचार स्टाल पर पहुंचने के लिए प्रेरित करें।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह